International Journal of Advanced Education and Research
ISSN: 2455-5746
Impact Factor: RJIF 5.34
www.alleducationjournal.com
Volume 2; Issue 5; September 2017; Page No. 80-81

न्याय की मूर्त दाता रणपत डोगरी नाटक 'सरपंच' के संदर्भ से

बह्म दत्त 'मगोत्रा'
बडाली, विजयपुर, साम्बा, जम्मू व कश्मीर, भारत।

भारत

डुग्गर प्रदेश पूरी दूनियां में सादगी, वीरता और चित्रकारी के लिए विख्यात है। इस धरती ने कईं ऐसे शूरवीरों को उपजा है, जिन्होने अपने तलवार की धार से न्याय और अन्याय का फैसला किया। वीर गुलाब सिंह, वीर रंजीत सिंह, वीर हरी सिंह, ब्रिगेडियर राजेन्द्र सिंह आदि कईं योद्वाओं ने अपनी मातृ भूमि के लिए संघर्श किए है और अपने प्राण तक न्योछावर कर दिए। लेकिन वीर पुरूशों का निर्णय केवल ताकत द्वारा ही प्रमाणित नहीं होता। बल्कि गलत को गलत कहने वाला हर मनुश्य वीर पुरूश है। जो लोग अन्याय को चुप–चाप सहते हैं वह सबसे बड़े डरपोक और कायर लोग होतें है और यही कुछ चेहरे अन्याय करने वालो को ताकत प्रदान करते हैं। अन्याय के खिलाफ उठ खड़े होना और उसको सहन न करना भी वीरता की ही निशानी है। डुग्गर प्रदेश में बाबा जित्तो जैसे महांपुरूश हुए हैं जिन्होनें अपने शौर्य का परिचय कुछ अनोखे ढंग से दिया। उनके बलिदान से डुग्गर प्रदेश में क्रांन्ति की लहर फैल गई थी और अन्यायी थर–थर कांप उठे थे। उस बलिदानी किसान को आज तक पूजा जाता है। दाता रणपत जी को भी वीर पुरूश कहना कोई अनुचित नहीं वह जाति के ब्रह्मण थे और राजपूतों के कुल पुरोहित भी थे। उनका निवास स्थान वीरपुर था। नाटक के संदर्भ से उनकी आयु 25 वर्श की है और उनकी नई–नई शादी हुई है। उनकी पत्नी का नाम शुक्रा है उसको एक आदर्श पत्नी के रूप में दर्शाया गया है जिसका प्रमाण हमें उसके इस संवाद से मिलता है, जब रणपत जी उसके समुख अपने परिवार और अपने आप को अयोग्य बताते हैं तो जवाब में वह कहती है, ''नहीं! अपने देवता की पुजारिन। गोतम–बुद्व के समान दयालु और तेजस्वी आपके चरणों की दासी'' [1]

दाता रणपत जी को घर गृहस्ती और समाज में बड़ी मान प्रतिश्ठा हासिल है। उनकी माता का नाम आलमा है, वह धार्मिक प्रवृति की मिसाल हैं। दाता रणपत जी समाज में फैली कुरीतियो, गरीबी और जागीरदाराना निज़ाम से परेशान है। नाटक में बागी जागीरदार और चौधरी के आपसी घरेलू झगड़े को मुख्यता से व्यक्त किया गया है। बागी क्रूर, निर्देयी और बेईमान किरदार है और चौधरी गरीब, मजलूम और इमानदारी का मूर्त। उनके पड़दादा का नाम 'वीरा' था वह वड़ा प्राक्रमी और मेहनती भी। कड़ी मेहनत से हजारों किल्ले जमीन तैयार की। वीरा ने दो शादियां की थीं लेकिन दोनो पत्नीयो की आपस में अनबन के चलते यह परिवार दो हिस्सों में बंट गया वीरपुर और द्राली। दोनों पत्नीयों का एक–एक पुत्र था धरमा और बरीता। अलग–अलग घरों में रहने पर भी उनकी जमीन –जायदाद इक्टठी ही थी। वह बहुत प्रेम भाव और स्नेह से रहते थे। उन दोनों के जहां एक पुत्र हुआ गणेश और मक्खन। गणेश चौधरी के पिता का नाम था और और बांगी मक्खन का पुत्र था। नाटक में बांगी चौधरी का आधा हिस्सा जबरदस्ती हड़प लेता है और उसके भाईयों और पुत्रों को बड़ी बेरहमी से मरवा देता है। अब वह लोगों पर अत्याचार और जुल्म करके खलनायक बना हुआ है। उसके डर और ताकत से लोग उसके जुल्मों का शिकार हो रहें है। जो लोग उसके इस दुरव्यवहार से तंग आकर विद्रोह करने की सोच तक भी रखते हैं तो वह उसका सिर कुचल देता है। मौत के डर से सभी उससे परेशान है। चौधरी अपने ऊपर हुए अन्याय के इंसाफ के लिए कोर्ट कचैहरी तक भी जाता है। लेकिन बांगी पैसे और ताकत के बल पर सभी का मुँह बंद कर देता है और चौधरी लाचार बेबस सा रह जाता है। एक तरफ दाता रणपत को चौधरी की लाचारी पर दया आती है तो दूसरी तरफ बांणी जागीदार पर आक्रोश भी। चोह्लो बांगी जागीरदार का छोटा भाई है वह बांगी के बिल्कुल खिलाफ और विद्रोह में खड़ा रहता है। वह उसकी पाप की कमाई का एक तिनका तक नही छूता। वह मजदूरी करके अपनी गुजर–वसर करता है। चौह्लो का मजदूरी करना बांगी जागीरदार को बिल्कुल भी अच्छा नही लगता। वह उसकी परवाह किए बगैर अपने तरीके से जिंदगी जीता है, वह उसके पाप का भागीदार कदाचित नही बनना चाहता और बांगी को भी इस कुकर्म से परहेज करने की नसीहत देता रहता है। चोह्लो अपने बड़े भाई को चौधरी का हिस्सा वापस देने की रट सी लगाए रखता है बांगी उसके इस व्यवहार से उसको अपना दुश्मन समझने लगता है। वह बांगी से कोई भी संबंध रखना नही चाहता अगर वह न्याय का रास्ता नही अपनाएगें। उनकी यह प्रवृति नाटक में उनके द्वारा कहे गए इस संवाद से प्रतीत होती है जैसे :–

> ''पुरोहित जी! जब तक इन्होनें बीरपुर वाले भाइयों का हिस्सा नहीं दिया, तब तक मेरा उनके साथ कोई भाईचारा नहीं।'' [2]

जब एक दिन दोनो भाई इसी मसले पर झगड़ रहे थे तो दाता रणपत उनकें यहां पधारते है। उनको आपस में लड़ते देखते वह दुखी होते हैं और उनको सही रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित करते हुए आग्रह करते है :–

> ''आपके इस ऊंचे खानदान में भाई–भाई के ऐसे झगड़े शोभा नहीं देते। अगर कोई झगड़े वाली बात है तो उसको बैठकर सुलझा लेना चाहिए।'' [3]

चोह्ला दाता रणपत जी से अनुरोध करता है कि वह हमारे इस झगड़े का निर्णय करें। पुरोहित होने के कारण दाता रणपत जी तो पहले मना कर देते हैं लेकिन बांगी जागीदार की इच्छा महसूस करने पर वह उनके इस झगड़े का फैसला करने के लिए सरपंच बनाने की मंजूरी दे देते हैं। बांगी जागीरदार इस फैसले के कारण अंदर से हिल जाता है क्योंकि उसको पता है कि दाता रणपत हमेशा दीन–दखियों और सच्चाई का साथ देते आए है। लेकिन

बांगी जागीरदार को अपनी ताकत पर दृढ विश्वास है, वह सोचता है कि मैं रणपत को खरीद लूंगा जैसा वह करता आया है। अपनी इस आदत से मजबूर वह यही कुचाल चलता है। वह फिड्डू और मोह्तबर को दाता रणपत के यहां दान के रूप में रिश्वत देने की कोशिश करता है। उन दोनो के बेहकावे में जब दाता रणपत नहीं आते तो वह उनको धमकी भी देते हैं इस पर दाता रणपत को और गुस्सा आता वह उनके परामर्श को ठुकराते हए कहते हैं :–

> ''यह नहीं हो सकता। मौत के डर से और धन के लोभ के कारण मैं अपना धर्म छोड़ने के लिए तैयार नहीं।''[4]

फिर एक दिन वह फैसले की घड़ी भी नजदीक आ जाती है। दाता रणपत जी की अगवाई में पंचायत बिठाई जाती है। बांगी जागीरदार वहां भी बेईमानी करता है और चौधरी के हक में बोलने बाले लोगों को पंचायत में नां आने की दमकी देता है। वह अपने लिए वहां सिहासन तैयार करवाता है और उस पर बड़े ठाठ से हुक्का पीने लगता है। उसके इस वर्ताव को देखकर सरपंच को गुस्सा आता है। फिर सर्वसम्मति से उसको नीचे बैठने की आज्ञा दी जाती है। सरपंच जी कहते है कि जहां पर आए सभी लोग दोनों पक्षों की दलीलें सुनकर निरपक्ष फैसला करने में मेरी मदद करें। कार्यवाही शुरू होते ही सबसे पहले चौधरी को अपनी दलीलें और गवाह् पेश करने के लिए कहा जाता है। वह फटेहाल मजलूम और गरीबी का मारा अपनी सारी दास्तां रोते हुए सुना डालता है। सभा में बैठे सभी लोग सच्चाई से परिचित है, लेकिन बांगी के खिलाफ गवाही देने का साहस किसमें था। उनमें से एक दो जन जिनमें गांव का एक बुजर्ग और चोह्लो (बांगी का छोटा भाई) उसके पक्ष में अपनी दलीलें रखते हैं लेकिन कोई भी ठोस गवाह् पेश नहीं कर पाते। इसलिए किसी सी निर्णय तक पहुंचना मुश्किल हो रहा था। इतनी देर में सरपंच (रणपत की मां) की मां वहां एक लिखत लेके पहुंचती हैं जो सभी और सन्नाटा सा छा जाता है। अस्सी साल पहले की लिखत पंचायत में पड़ी जाती है उसमें साफ लिखा था कि छपड़ी (छोटा तालाब) जो उनकी सारी जमीन के मध्य में थी, वही पर कोयले की एक लम्बी रेखा खींची गई थी। बरगद के पेड़ के उत्तरी तरफ की आधी जमीन और वीरपुर वाला घर धरमा (चौधरी का दादा) के हिस्से में आता है। दूसरी तरफ बरगद के पेड़ के दक्षिण की तरफ वाला हिस्सा और द्राली वाला घर बरीता (बांगी का दादा) का हुआ। यह लिखत पढ़ने के बाद भी बांगी अपने हठ से नहीं डोलता। अब वहां पर न।तो छपड़ी (छोटा तालाब) थी और नां ही बरगद का पेड़। दुबिदा भरी स्थिति में सरपंच के निर्णय से कोयले की रेखा को खोदने का काम शुरू हो जाता है। कुछ ही देर में दूध–का दूध और पानी का पानी हो जाता है। फिर बड़ी निड़रता से सरपंच जी फैसला सुनाते हुए कहते है :–

> ''दीवार से ऊपर वाली सारी जमीन चौधरी की हुई, वह वहां हल से जुताई कर सकता है।''[5]

दाता रणपत के इस बेखौफ निडरतापूर्ण फैसले ने लोगों में उत्साह भर दिया। कमजोर और बेबस चौधरी को अपना हक मिला। इस तरह दाता रणपत ने अन्याय का साथ न देते हुए न्याय का साथ दिया। उनके इस फैसले से बांगी जागीरदार घायल शेर की तरह गुर्राने लगा और दाता रणपत को मारने के लिए उतावला हो गया। देखते ही देखते फिड्डू और मोहतबर ने एक साजिश और रच डाली। रणपत के मसेरे भाई जो त्रलोकपुर में रहते थे वह वहुत गरीब थे, वह उनको पैसों का लालच देते हैं और बांगी उनको पुरोहित बनाना स्वीकारता है। लोभ में आकर वह दाता रणपत का कत्ल करने के लिए राजी हो जाते हैं। एक दिन मौका पाकर वह दाता रणपत पर (सरोर से वापिस घर आते) रास्ते में धोखे से कटार और कुल्हाड़ी का वार कर उसे लहू लुहान कर देते हैं, फिर बांगी जगीरदार उसकी जीवन लीना समाप्त कर देता है। ऐसे न्याय की मूर्त दाता रणपत को सच्चाई और न्याय के रास्ते पर चलने का मुआबता मिलता है। नाटक के संदर्भ से बांगी जागीरदार पागल सा हो जाता है उसे ब्रह्म हत्या का क्रोप लगता है वह कभी खुद अपना गला दवाता है तो कभी पापी कहता है। वह अंधा हो जाता है और उसको कीड़े पड़ जाते हैं। सारी लुकाई उसको हत्यारा, पापी और द्रोही कह कर उसकी दुर्दशा करते हैं। अंत में उसकी दर्दनाक मौत हो जाती है। दाता रणपत के इस बलिदान से जगीरदारान निजाम की जड़ें हिल गई और आम जनता ने सुख की साँस ली। दाता रणपत जैसे देव पुरूश को आज भी लोग देवता के रूप में पूजते हैं। इनके निवास स्थान वीरपुर में इनकी याद में भव्य मंदर और तालाब का निर्माण हुआ है। कहते है जो भी श्रदालु निश्ठा से वहां पूजा अराधना करते है उनकी सारी मनोकामनाएँ पूरी होती हैं। इस लेख में जो उक्तियां दी गई है वह डोगरी नाटक सरपंच से अनुवादित की गईं हैं।

संदर्भ

1. सरपंच, दीनू भाई पंत, पेज़ – 8
2. सरपंच, दीनू भाई पंत, पेज़ – 34
3. सरपंच, दीनू भाई पंत, पेज़ – 34
4. सरपंच, दीनू भाई पंत, पेज़ – 53
5. सरपंच, दीनू भाई पंत, पेज़ – 72